SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति में राम

ज्योति बाला साहू, पीएच–डी, हिंदी विभाग
डॉ. राधा बाई शासकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, भाठागांव, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
ज्योति बाला साहू, पीएच–डी
E-mail : jyotibalasahu7@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 21/05/2026
Revised on : 22/07/2026
Accepted on : 31/07/2026
Overall Similarity : 01% on 23/07/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Jul 23, 2026 (05:25 PM)
Matches: 0 / 2010 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

छत्तीसगढ़ की धरा राम मय होने के कारण यहां की मिट्टी की सोंधी खुशबू में राम बसी हुई हैं क्योंकि पारब्रह्म परमेश्वर को निर्गुण निराकार रूप से सगुण रूप में इस धरती में लाने वाली मां कौशल्या हमारे छत्तीसगढ़ की बेटी है इसलिए परम पावन एवं पुण्य छत्तीसगढ़ सनातन काल से संत महात्माओं की पूजा स्थल रही है। सुबह सोकर उठने से लेकर के रात की सोने तक अपने अधिकांश कर्मों में छत्तीसगढ़ वासी राम नाम को जोड़ते हैं। यहां के अधिकांश लोग प्रतिदिन राम नाम का मंत्र जाप करते हैं। छत्तीसगढ़ वासियों का मानना है कि भगवान राम का नाम अमंगल को हरने वाले तथा मंगल प्रदान करने वाले हैं। भगवान राम ने अपने 14 वर्ष के वनवास काल में से अधिकांश समय छत्तीसगढ़ में व्यतीत किए हैं इसलिए छत्तीसगढ़ की धरती उनकी लीला भूमि रही है। छत्तीसगढ़ वासी अपने 16 संस्कारों में से तीन प्रमुख संस्कार जन्म संस्कार विवाह संस्कार और मृत्यु संस्कार में राम को समाहित करके इह लोक से परलोक तक के जीवन को राममय करने का प्रयास करते हैं।

मुख्य शब्द

लोकसंस्कृति, जनमानस, लीलाभूमि, रामचरितमानस, कौशिल्या, लोकगीत.

प्रस्तावना

लोकगीत लोककण्ठ की धरोहर है। लोकगीतों के माध्यम से हृदय की बात को हम वाणी का रूप् प्रदान करते है। जहाँ मनुष्य के जन्म–मरण, मंगनी–विवाह, आचार–विचार, दुख–सुख, हास–परिहास, पर्व – त्यौहार, जन्म–मृत्यु, धर्म–कर्म आदि हमारे संस्कारों को लोकगीतो के माध्यम से उन्हे मुर्त रूप प्रदान करते है। लोकगीत जीवन का स्फुट काव्य है। लोकगीतो का क्षेत्र बहुत व्यापक है।

छत्तीसगढ़ के जनमानस में राम–प्रतिष्ठित है। सुबह आँख खुलते ही राम–राम, सुबह अगर किसी से भेंट हो गई तो राम–राम भैया। अगर कुछ गलत या अच्छा हुआ तो हे! राम,

भय, पीड़ा, शोक, हर्ष, आदि भावों विभावों मैं अनायास हमारे मुख से राम का नाम निकलता है।

छत्तीसगढ़ के जन–मानस की दृढ़ आस्था और विश्वास राम के नाम पर है इसलिए वो अपने जीवन के हर संस्कार में राम को लेकर राममय करते हैं। बच्चों का नामकरण वे राम नाम युक्त करते हैं। जैसे– रामलाल, रामप्रसाद, रामभरोसे, चोवाराम, बैसाखु राम, शिवराम, रामबाई, राम प्यारी, रामकली, राममनोहर, आदि, ताकि इसी बहाने राम नाम का उच्चारण होता रहे।

छत्तीसगढ़ भी राम जी की लीलाभूमि रही है, यहाँ के लोक साहित्य, लोकनाटक, लोकजीवन में राम रचे बसे है। इनका प्रमुख कारण है निर्गुण निराकार राम को एक सगुन साकार रुप में लाने वाली माँ कौशिल्या हमारे छत्तीसगढ़ की बेटी है। इस कारण राम जी का ननिहाल है छत्तीसगढ़।

आज भी हर भांजा को छत्तीसगढ़ में राम का ही रुप मानकर झूककर प्रणाम करते है चाहे वो कितना भी छोटे क्यों न हो साथ ही पारब्रम्ह परमेश्वर को एक बालक के रूप में यज्ञ के द्वारा अयोध्या के भुमि पर राजा दशरथ के पुत्र के रूप में लाने वाले महर्षि श्रृंगी ऋषि भी छत्तीसगढ़ के ही है। राम वनवास के समय प्रभु राम सीता जी लक्ष्मण को जिस दण्डकारण्य में रखे थे वो दण्डकवन भी छत्तीसगढ़ में है। यहाँ की भूमि के रग–रग में राम बसे हुए है।

छत्तीसगढ़ ग्राम्य बहुल प्रदेश है। जहाँ अगर जीवन में कुछ दुःख हो या सुख, राम समाये हुए है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है– 'राम–राम कहि जे जमुहाही, तिन्हहि न पाप पुंज संमुहाही।'

अर्थात– अगर जमहाई में राम का नाम आ जाये तो पाप ऐसे हो कोसो दुर भाग जाते हैं। राम का नाम एक ऐसा महामन्त्र है जिनको आप जैसे भी लेते रहे चाहे मन से लो या अनमने भी ले लो तो हमारा मंगल ही करता है इसलिए छत्तीसगढ़ में लोग अधिकांशतः रामकथा, मानस यज्ञ के द्वारा स्वयं तो पवित्र होते ही है पुरे गांव को राम मय, भक्तिमय, कर देते है।

'भायँ कुभायँ अनख आलस हूँ।
नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।'

1. जन्मसंस्कार

छत्तीसगढ़ सप्तर्षियों का विचरण क्षेत्र रहा है, इस कारण यहाँ के रहवासियों के स्वभाव में भोलापन, उदार, सरलता विद्वता एवं आत्मीयता के भाव छिपे होतें है। छत्तीसगढ़ की धरा राममय है। जनमानस के मन, बुद्धि, प्राण, सभी में राम समाय हुए है। इस कारण अगर किसी के घर में नन्हा शिशु का जन्म होता है तो वहाँ की स्त्रियां मंगल गीत गाती है जिन्हें सोहर गीत कहते है और नन्हा शिशु को राम का ही स्वरुप मानकर उस बालक को उनकी मां को बधाई देते हैः

जुग–जुग जिये तोर लाला, कौशिल्या दुलारा हो मैया,
तोरे घर राम बिराजे, उत्साह मंगल होवत हे ना
काखर पुत राम काखर पुत भरत हो मैया
काखर पुत लखन कुमार शत्रुघन लाल हो मैया
कौशिल्या के राम, कैकई के भरत हो मैया
सुमित्रा के लखन कुमार, शत्रुघन लाल हो मैया।

प्रायः जन्म के उपरान्त छः दिन बाद छठ्ठी का कार्यक्रम होता है उसमें भी घर के लोग उस नवजात शिशु के उज्जवल भविष्य की कामना लेकर राम कथा घर में कराते है। रामचरित मानस के दोहे–चौपाई को घर में आये मेहमान बैठकर एक साथ सुनते है अर्थात् राम से ही एक जीव की जीवन के प्रथम सोपान शुरू करने की परम्परा हमारे छत्तीसगढ़ में देखने को मिलती है। जन्म के उपरान्त सबसे महत्वपूर्ण संस्कार है विवाह संस्कार।

2. विवाह संस्कार

विवाह परख लोकगीतों में राम की धुन सुनाई देती है वर और वधु को राम–सीता की युगल जोड़ी के रूप में देखा जाता है और विवाह के तीन दिन तक वह किन्ही का पैर नहीं छूते। उन्हें राजा–रानी माना जाता है। विवाह दो आत्माओं का मिलन है जो एक नई जिंदगी की शुरुआत करते हैं ऐसे में उन नए दंपति के जीवन में राम और सीता की प्रेम बने रहे इसलिए लोक गीतकार अपनी भाव प्रकट करते हुए राम का नाम उच्चारित करते हैं। विवाह की रस्म में अनेक रस्म व रीति–रिवाज हमारे छत्तीसगढ़ में करते हैं जैसे तेलचघी– विवाह के रस्म में एक रस्म है तेलचघी जिसमें गांव की सुहागिन स्त्रियां हल्दी और तेल

का लेप बनाकर दूल्हा और दुल्हन के अंगों का लेपन करते हैं। और यह गीत गुनगुनाती हैः

''एक तेल चढ़िगे हो हरियर हरियर
मड़वा मा दुलरु तोर बदन कुम्हलाये
राम अउ लखन के तेल ओ चढ़त हे,
कंहवा के दियना होवे अंजोर''[1]

बारात– विवाह में सबसे महत्वपूर्ण होती है बारात परघाना। इस दिन दूल्हे और दुल्हन को बहुत सुंदर ढंग से सजाया जाता है, मानो संसार के सबसे सुंदर नर प्रभु राम और सबसे सुंदर नारी सीता जी हो। इसे लोकगीत कार अपने गीत में कहते हैं:

''बड़े–बड़े देवता रेंगत हे, बरात ब्रह्मा महेश
लिलि हंसा घोड़वा में राम चन्द्र चघत हे।
अउ लक्षिमण चघे सिंघ बाघ।
लहसत रेंगत डांडी अउ डोलवा
नाचत रेंगत हे बरात।''[2]

साथ ही छत्तीसगढ़ में अनेक जाति वर्ग के द्वारा कुछ विशेष लोकगीत गए जाते हैं जिसमें भी हमें राम की छवि नजर आती है। छत्तीसगढ़ के कुछ प्रमुख पुरुष प्रधान लोकगीत जैसे पंडवानी, पंथी, डंडा गीत आदि में भी राम रमाय हुए हैं।

3. पंडवानी गीत

पंडवानी छत्तीसगढ़ की एक ऐसी लोक विधा है जिसमें भरथरी के अलावा अहिमन रानी, रेवारानी, शीत बसंत, लोरीक चंदा, आल्हा ऊदल की कथाएं भी प्रचलित है जो मुख्यतः महाभारत की कथा गाते हैं।

''रामा रामा रामा रामा रामा रामा भाई जी
पहली बंदौनी गांवव पहली बंदौनी जी।
पहली बंदौनी गुरु माता अउ भाई
दूसर बंदौनी गांवव दूसर बंदौनी जी।''[3]

4. डंडा गीत

वस्तुतः यह छत्तीसगढ़ का रासगीत है जिन्हें पुरुष लोग करते है। हाथ में डंडा या छोटी लकड़ी होती है जो सज धज कर नृत्य करते हैं। यह वृत्ताकार हो घूम–घूम कर नाचते हैं। डंडा गीत में राधा कृष्ण की प्रेम लीलाओं के साथ राम लक्ष्मण से संबंधित उदाहरण भी प्रस्तुत किए जाते हैं।

''राम सीता बिना सुना, सुना भईगे जोइधा राम बिना
कौशल्या माता रोवत हावे, दशरथ राजा तलफत हावै।
परजा मन सब रोवत हावे सब झन मिल के छेकत हावे।
राम राम गोहरावत हावै, दुश्टिन केकैई कहत हावै।
सब झन गारी देवत हावै, सब झन गारी देवत हावै।''[4]

5. करमा गीत

करमा गीत मनोरंजन का गीत है मुख्यतः करमा गीत बारिश शुरू होने के साथ गाए जाते हैं और फसल काटने तक गाते हैं। करमा गीत गाने का तात्पर्य कर्म देवता की पूजा की जाती है। करमा गीत के भाव बहुत सुंदर होते हैं एक लोकगीतकार अपने करमा गीत में राम को पिरोकर अपनी लेखनी को पवित्र की हैः

''चोला रोवत हे राम बिना देखे परान
दादर झांवर झाड़ी ढूंढो, डोंगर बीच मंझान।
सब परेतन तोला ढुंढौ कहां लूहे हे जाय
चोला रोवत हे राम बिना देखे परान।''[5]

6. ददरिया

ददरिया को लोकगीतों का राजा कहते हैं। ददरिया गीत संवाद के रूप में खेत खलिहान में काम करते हुए श्रमिक साध्य हेतु गाते हैं। इस गीत में वाद्य यंत्र की आवश्यकता नहीं होती। इस गीत में लोक गीतकार राम को अपनी गीत में लेते हैं:

''रामधरे धनुष लखन धरे बाण, सीता माई ला खोजे बर निकल गे हनुमान।
गए बाजार बिसाय ला खुमरी, तीजा पोरा ला आवन दे खवांहो ठेठरी खुरमी।''[6]

7. जंवारा गीत

छत्तीसगढ़ में साल में दो बार नवरात्र का त्यौहार मनाते हैं जिसमें दुर्गा भक्ति के शगुन उपासक दुर्गा जी की मूर्ति स्थापना के साथ गेहूं या जौ का रोपण करते हैं जिसे जंवारा कहते है। जंवारा एक लोक अनुष्ठान माना जाता है जिसमें लोक गीतकार यह कहते हैं– राम लक्ष्मण मिलकर नवरात्रि में जंवारा बोकर माता रानी की पूजा करते हैं:

''राम टिकुरिया में राम बिराजय, गिरिजापुर हनुमान हो।
ओ अटरिया मा लक्ष्मी देवी,तरि भैरव रखवार हो।''[7]

8. सुआ गीत

सुआ का तात्पर्य तोता नामक पक्षी है और सुआ गीत मूलतः गोड़ आदिवासी नारियों का नृत्य गीत है जिसे सिर्फ स्त्रियां ही गाती है। यह संपूर्ण छत्तीसगढ़ में दीपावली के पूर्व से गायी जाती है जो देवोत्थान (देवउठनी एकादशी) तक अलग–अलग परंपराओं में गाते हैं:

''पइंया परत हौं, मैं चंदा सुरुज के
मोला तिरिया जनम झनि देय सुआ रे
तिरिया जनम मोर अति करलई रे
मोला तिरिया जनम झनि दे सुआ रे।''[8]

9. मृत्यु परक गीत

मृत्यु सरकार जीवन का अंतिम संस्कार है। जब जीव इस संसार से विदा लेता है तो उसके अर्थी को जो चार लोग कंधा दिये रहते है इनके साथ जो पीछे पीछे चलते है वो बस यही कहते है– राम नाम सत्य है। तात्पर्य यह है कि ये शरीर नश्वर है। सत्य है तो केवल राम और राम का नाम है। भगवान शिव ने भी तो पार्वती से यही बात की:

''उमा कहऊ में अनुभव अपना, सत हरि भजन जगत सब सपना।''[9]

अर्थात् हे उमा ये संसार एक स्वप्न मात्र है सत्य तो केवल प्रभु का नाम है। मृत्यु तो सबको आनी ही है। चाहे वो राजा हो या रंक पर जो जन्म लिया है उनको एक दिन इस संसार को छोड़कर जाना ही है इसे लोकगीत कार कहते है।

''पाँच नाम को सुमिर लोहे चोला,
राम के नाम को सुमीर ले रे चोला
बाये कपास राजा हरे ल पीला
बहुत दुखित मैं आयो रे मनु चोला।''[10]

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ संस्कार धानी राज्य है जहां विविध प्रतिभाशाली लोकगीतकार अपनी रचनाओं में राम को लेकर यह अनुभव करते हैं कि राम का नाम हमारी लेखनी में आ जाए जिससे हमारी लेखनी भी पवित्र हो जाए। लोकगीतकार के लेखनी में ही नही वरन लोक जीवन में भी बच्चे–बुढ़े के जुबान में राम की गाथा रचे बसे हैं। ददरिया, सुआ गीत, करमा गीत, पंथी गीत, राउत गीत, भोजली गीत, जस गीत, गौरा–गौरी गीत, पंडवानी, भरथरी गीत, लोरिक–चंदा, ढोलामारू, बाँस गीत, देवार गीत, फाग गीत, डंडा गीत, चनैनी गीत, बारहमासी गीत, सोहर गीत, बधाई गीत, बिहाव गीत, विदाई गीत, तेल–हल्दी गीत, मड़वा गीत आदि लोकगीतो में भी राम समाये हुए हैं।

संदर्भ सूची

1. परमार, नारायण लाल (2000) *छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की भूमिका,* पहचान प्रकाशन, रायपुर, पृ. 110।
2. वही, पृ. 111।
3. तिवारी, राम कृष्ण (2007) *छत्तीसगढ़ का लोक संगीत,* प्रिया कम्प्यूटर्स एंड प्रिंटर्स, खैरागढ़, प्रथम संस्करण, पृ. 147।
4. तिवारी, कपिल (2010), छत्तीसगढ़ी परम्पराएँ, *चौमासा,* नवंबर– फरवरी, अंक 81, पृ. 43 ।
5. तिवारी, कपिल (2006) अनुष्ठानिक नृत्य गीत करमा, *चौमासा,* मार्च–जुन, अंक 70, पृ. 128.।
6. तिवारी, राम कृष्ण (2007) *छत्तीसगढ़ का लोक संगीत,* प्रिया कम्प्यूटर्स एंड प्रिंटर्स, खैरागढ़, प्रथम संस्करण, पृ. 142।
7. कसार, जमुना प्रसाद (2011) *छत्तीसगढ़ी गीत,* श्री प्रकाशन, दुर्ग, पृ. 136।
8. यदु, मन्नु लाल (2002) *छत्तीसगढ़ की संस्कृति–गंगा,* छत्तीसगढ़ अस्मिता प्रतिष्ठान, रायपुर, पृ. 43।
9. तुलसीदास, श्रीरामचरित मानस, गीताप्रेस गोरखपुर, अरण्यकाण्ड, दोहा 38।
10. वर्मा, शकुंतला (1971) *छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य और लोकजीवन का अध्ययन,* रचना प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, पृ. 307।

****